॥ श्रीहरिः ॥

॥ रुद्राभिषेक द्वारा लाभ ॥

किस किस द्रव्य से अभिषेक करने से क्या फल मिलता है ? अर्थात आप जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु रुद्राभिषेक करा रहे है उसके लिए किस द्रव्य का प्रयोग करना चाहिए । जिससे मनोवांछित लाभ मील सके । इसका सविस्तार विवरण प्रस्तुत है ।

जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशांत्यै कुशोदकै ।
दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन वै ॥

मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसा चाभिषेचनात ॥

बन्ध्या वा काकबंध्या वा मृतवत्सा च यांगना।
ज्वरप्रकोपशांत्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥

घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्त्रकम्।
तदा वंशस्यविस्तारो जायते नात्र संशयः ॥

प्रमेह रोग शांत्यर्थम् प्राप्नुयात मान्सेप्सितम।
केवलं दुग्धधारा च वदा कार्या विशेषतः ॥

शर्करा मिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्।
श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥

सार्षपेनैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ॥

जीवनार्थी तू पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै।
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेत्छिवं तथा ॥

महलिंगाभिषेकेन सुप्रीतः शंकरो मुदा।
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेद्विनिर्मितम् ॥

अभिषेक	फल (लाभ)
जल से	वृष्टि हेतु।
कुशा एवं जल से	रोग, दु:ख से छुटकारा हेतु।
दही से	पशु, भवन तथा वाहन की प्राप्ति हेतु।
गन्ने के रस से	लक्ष्मी प्राप्ति एवं सुख और आनंद हेतु।
मधु युक्त जल से	धन वृद्धि हेतु।
तीर्थ जल से	मोक्ष की प्राप्ति हेतु।
इत्र जल से	भौतिक सुखों एवं बीमारी नष्ट हेतु।
दुध से	पुत्र प्राप्ति, प्रमेह रोग की शान्ति तथा मनोकामनाएं पूर्ण हेतु।
गंगाजल से	चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति एवं ज्वर ठीक हेतु।
शर्करा से	सद्बुद्धि हेतु।
घी से	वंश का विस्तार हेतु।
सरसों के तेल से	रोग तथा शत्रु का नाश हेतु।
शहद से	बीमारियों से छुटकारा एवं पाप क्षय हेतु।

इस प्रकार शिव के रूद्र रूप के पूजन और अभिषेक करने से जाने-अनजाने होने वाले पापाचरण से भक्तों को शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है और साधक में शिवत्व रूप सत्यं शिवम सुन्दरम् का उदय हो जाता है उसके बाद शिव के शुभाशीर्वाद से समृद्धि, धन-धान्य, विद्या और संतान की प्राप्ति के साथ-साथ सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।